ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 65 अंक 8 अप्रैल 2018 वैशाख 2075 वार्षिक मूल्य 150 रु०

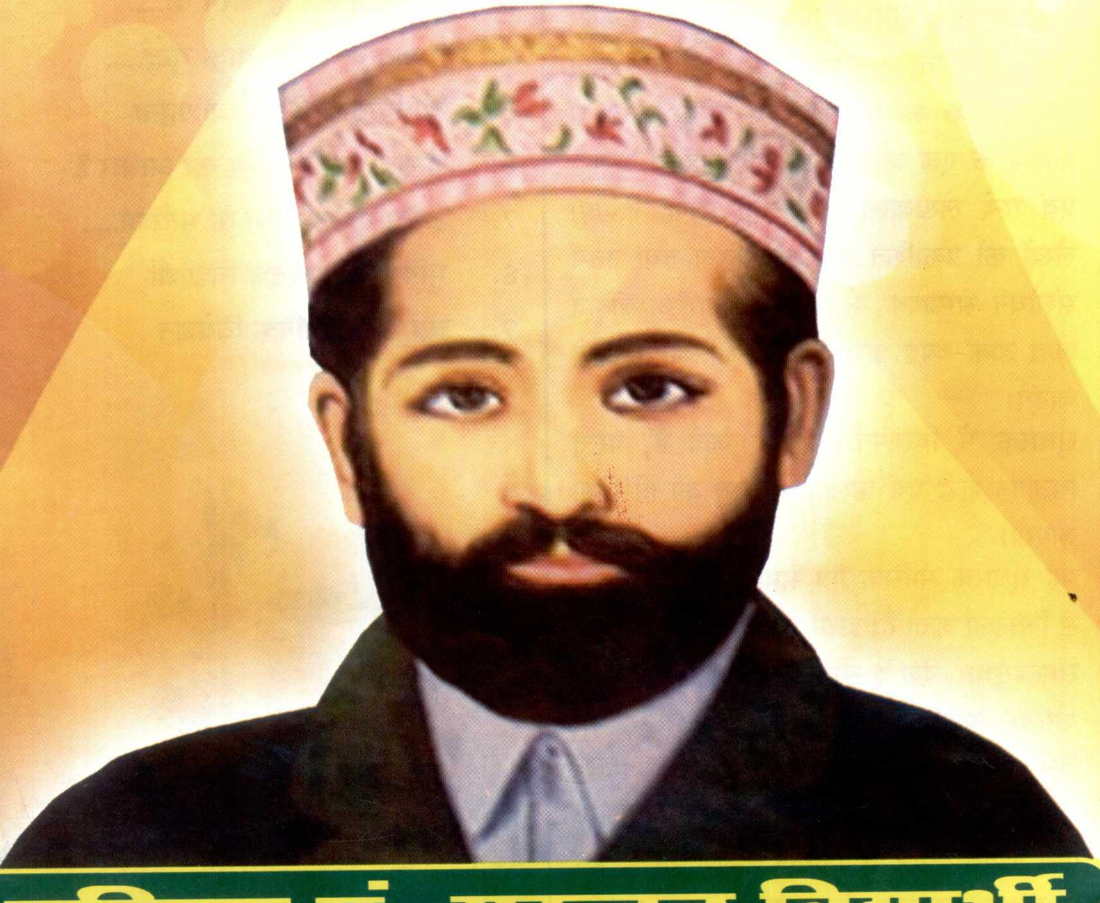

मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

26 अप्रैल 1864 ई. – 18 मार्च 1890

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष : 65
अंक : 8
अप्रैल 2018
विक्रमाब्द 2075
दयानन्दाब्द 195
कलिसंवत् 5118
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,118

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	आर्याभिविनयः	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	सगोत्र में विवाह करने के.....	5
4.	1965 के भारत-पाक युद्ध.....	10
5.	आर्षपाठविधि की विशिष्टता	16
6.	वस्तुतः यज्ञ ही सृष्टि का आधार है	17
7.	श्रद्धा एवं समर्पण के मूर्तरूप.....	19
8.	मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी	20
9.	यज्ञ एक वैज्ञानिक विवेचन	23

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

आर्याभिविनय:

स्तुति-विषय

किथ्ठं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं
कतमत्स्वित् कथासीत्
यतो भूमिं जनयन् विश्वकर्मा
वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षा: ।। 32 ।।

यजु० 17 । 18 ।।

व्याख्यान— प्रश्नोत्तरविद्या- [प्रश्न- (किंस्विदासी०)] इस संसार का अधिष्ठान क्या है? कारण तथा उत्पादक कौन है? किस प्रकार से है? तथा रचना करनेवाले ईश्वर का अधिष्ठानादि क्या है? तथा निमित्त कारण और साधन जगत् वा ईश्वर के क्या हैं? **(उत्तर)- (यत:०)** जिसका विश्व=जगत् कर्म किया हुआ है, उस विश्वकर्मा परमात्मा ने अनन्त स्वसामर्थ्य[1] से इस जगत् को रचा है। वही इस सब जगत् का अधिष्ठान निमित्त और साधनादि है। उसने अपने अनन्त स्वसामर्थ्य[1] से इस सब जीवादि[2] जगत् को यथायोग्य रचा और भूमि से लेके स्वर्गपर्यन्त रचके स्वमहिमा से **(और्णोत्)** आच्छादित कर रक्खा है। परमात्मा का अधिष्ठानादि परमात्मा ही है, अन्य कोई नहीं। सबका भी उत्पादन रक्षण धारणादि वही करता है, तथा आनन्दमय है। वह ईश्वर कैसा है? कि **(विश्वचक्षा:)** सब संसार का द्रष्टा है। उसको छोड़के अन्य का आश्रय जो करता है, वह दु:खसागर में क्यों न डूबेगा? ।। 32 ।।

प्रार्थना-विषय

तनूपाऽ अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि
आयुर्दाऽ अग्नेऽस्यायुर्मे देहि
वर्चोदाऽ अग्नेऽसि वर्चो मे देहि।
अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्मऽआपृण ।।33।।

यजु० 3 । 17 ।।

व्याख्यान— [(तनूपा अग्ने०)] हे सर्वरक्षकेश्वराग्ने! तू हमारे शरीर का रक्षक है। सो शरीर को कृपा से पालन कर। **[(आयुर्दा०)]** हे महावैद्य! आप आयु=उमर बढ़ानेवाले तथा रक्षक हो, मुझको सुखरूप उत्तमायु दीजिये। **[(वर्चोदा०)]** हे अनन्तविद्यातेज:! आप 'वर्च:'=विद्यादि तेज=प्रकाश अर्थात् यथार्थविज्ञान देनेवालने हो, मुझको सर्वोत्कृष्ट विद्यादि तेज देओ। पूर्वोक्त शरीरादि की रक्षा से हमको सदा आनन्द में रक्खो। **[(यन्मे तन्वा०)]** और जो-जो कुछ भी शरीरादि में 'ऊनम्'=न्यून हो, उस-उस को कृपादृष्टि से सुख और ऐश्वर्य के साथ सब प्रकार से आप पूर्ण करो। किसी आनन्द वा श्रेष्ठ पदार्थ की न्यूनता हमको न रहे। आपके पुत्र हम लोग जब पूर्णानन्द में रहेंगे, तभी आप पिता की शोभा है[1]। क्योंकि लड़के लोग छोटी वा बड़ी चीज अथवा सुख पिता-माता को छोड़ किससे मांगें? सो आप सर्वशक्तिमान् हमारे पिता सब ऐश्वर्य तथा सुख देनेवालों में पूर्ण हो।। 33 ।।

सम्पादकीय....

विवाह आदि के खर्च में कटौती करें

गृहस्थ व्यक्ति की पुत्रियां जब विवाहयोग्य हो जाती हैं, तब परिवार के मुखिया को पुत्री के योग्य वर तलाशने की चिन्ता लग जाती है। बहुत भाग-दौड़ करने पर, अपने परिचितों से भी वर ढूंढने के लिए सहायता लेने पर जब योग्य वर का पता लग जाता है तो वर पक्ष की ओर से दहेज के रूप में जो मांग की जाती है, उसे देखकर कन्या के पिता और पूरे परिवार को चिन्ता सताने लग जाती है। यदि वर उच्च शिक्षित और अच्छा वेतन पाने वाला या धनी है तो उनके भाव आसमान को छूने लगते हैं। वर पक्ष चाहता है कि जन्म से लेकर आज तक लड़के पर जो कुछ व्यय किया गया है उसकी भरपाई कन्यापक्ष से करवा ली जाये। वर पक्ष को यह सोचना चाहिये कि तेरे वंश की वृद्धि के लिए कन्या के माता-पिता ने लड़की को पाल पोषकर, पढा लिखा कर योग्य बनाकर सौंप दिया है, तो इससे अधिक गाड़ी, मोटर साइकिल, फ्रिज, कूलर, ए०सी०, बिस्तर, बर्तन, टी०वी०, अलमारी, सिलाई मशीन, घड़ी, अनेक स्त्री-पुरुषों के लिए सोने की जंजीर, अंगूठी, सारे परिवार के लिए वस्त्र, सोफा सेट और डबलबैड आदि विविध प्रकार के सामान की मांग करना और देना सर्वथा अनुचित है। यदि वह कमाता है तो वह अपने व्यय से अपनी इच्छित वस्तुएं खरीद सकता है। यदि नहीं कमाता तो कन्या पक्ष से लेकर कितने दिन तक गुजारा कर लेगा। ऐसे निठल्ले और लोभी वर के साथ सम्बन्ध जोड़ना सारी आयु भर दु:ख भोगना है। इतना होने पर भी कन्या पक्ष से रुपये की मांग की जाती है, न देने पर वधू को प्रताडित करते हैं और मार भी देते हैं।

अत: दोनों ओर के परिवारों को अपने सामर्थ्य और योग्यता को देखते हुए व्यवहार करना चाहिये। लड़की दो-चार वस्त्र तथा दो-चार आभूषण लेकर वर के साथ चली जाये। अधिक की इंच्छा हो तो उसका प्रबन्ध वर करे। वर के सारे परिवार के लिए वस्त्राभूषण आदि की मांग से कन्या के परिवार को ऋणभार से दबना पड़ता है। ऐसे अवसर पर जो वस्त्र लिये जाते हैं, प्राय: करके उन्हें पहना नहीं जाता, उनसे ट्रंक भरे रहते हैं, ये वस्त्र इसी भांति के अन्य अवसरों पर देकर अदला-बदली होते रहते हैं।

वर पक्ष दलील देता है कि हम कुछ नहीं मांगते, किन्तु कन्या का पिता अपनी पुत्री की सुविधा हेतु यह सब सामान देता है। परन्तु वर पक्ष को भी यह सोचना चाहिये कि हम घर का खर्च चलाने में समर्थ हैं, हमें केवल अपने वंश की वृद्धि हेतु एक कन्या की आवश्यकता है, उसे विवाह के द्वारा अतिसीमित व्यय करके प्राप्त किया जा सकता है।

समाज के धनी व्यक्ति अन्धाधुन्ध व्यय करके विवाह की प्रक्रिया पूरी करते हैं। इस व्यय में नाचना-गाना, उछलना, कूदना, शराब पीना, पटाखे चलाना, डी०जे० बजाना, भोजन हेतु सैंकड़ों प्रकार के खट्टे-मीठे, चटपटे व्यंजन बनाना, समारोह स्थलों पर बिजली आदि हेतु लाखों रुपये व्यय करना आदि अनावश्यक खर्च किया जाता है। इतना दिखावा न करके सामान्य रूप से सात्विक

ढंग से भी विवाह किया जा सकता है। इस प्रकार किया जाने वाला व्यय बचाकर वह धन पति-पत्नी के भावी जीवन को सुखमय बनाने हेतु दिया जाना चाहिये। धनिकों की देखा-देखी निर्धन व्यक्ति को भी समाज में अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाने के लिए सामर्थ्य से बाहर होकर तथा ऋण लेकर भी अपनी कन्या का विवाह करना पड़ता है। इससे कन्यापक्ष ऋणभार से दबकर लम्बे समय तक उबर नहीं पाता।

अतः समाज के प्रबुद्ध और बुद्धिजीवी व्यक्तियों का यह कर्त्तव्य बनता है कि समाज में होने वाले सभी प्रकार के अपव्यय को रोकने के लिए जनजागरण करें। इस कार्य में ग्राम पंचायतों और धर्मोपदेशकों को पहल करनी चाहिये।

सन् 1952 में बेरी (झज्जर) में महापंचायत करके विवाह सम्बन्धी नियम निर्धारित किये थे कि बारात में पांच व्यक्ति जायेंगे, आभूषण और वस्त्रादि पर भी निश्चित राशि तय कर दी गई थी। अनेक वर्षों तक समझदार परिवारों ने इस प्रक्रिया को दृढतापूर्वक निभाया, परन्तु निठल्ले लोगों की दूसरों के धन पर गुजारा करने की प्रवृत्ति तथा पिता को अपनी पुत्री जैसे तैसे विवाहित करनी ही है, इन दोनों कारणों से यह व्यवस्था नहीं चल पाई। इस परम्परा को पुनः चलाने की आवश्यकता है। रात्रि के समय होने वाले विवाहों में बिजली की चकाचौंध और पटाखों से उत्पन्न दूषित वायु भी स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त नहीं होती।

विवाह समारोह पर जैसे व्यय होता है, लगभग उसी प्रकार लगन और भात पर भी व्यय होने लग गया है। पचासों व्यक्ति लगन लेकर आने लग गये तथा लगभग इतने ही अथवा कुछ कम व्यक्ति भात के नाम से भी आजाते हैं। विवाह अवसर की भांति इस कार्यक्रम में भी भोजनादि और पांडाल आदि का प्रबन्ध करना पड़ता है। दहेज का सारा सामान भी लगन के अवसर पर ही समर्पित करने लग गये। यदि बुद्धिमत्ता से काम लिया जाये तो चार-पांच व्यक्ति इन दोनों प्रक्रियाओं को सम्पन्न कर सकते हैं। परन्तु इन दोनों अवसरों पर अधिक से अधिक धन-वस्त्र-आभूषण-बर्तन आदि देकर अपनी गरिमा का प्रदर्शन करते हैं। समाज में घुन की भांति खाने वाली इन कुरीतियों पर अंकुश लगाना ही चाहिये।

विवाह आदि समारोहों पर सूचना हेतु निमन्त्रण पत्र (कार्ड) छापना, घर-घर जाकर तथा दूर-दूर तक की रिश्तेदारियों और मित्रों के पास पहुंचकर निमन्त्रित करने पर भी धन और समय का अपव्यय होता है। आजकल फोन की सुविधा से यह कार्य अल्प समय स्वल्प परिश्रम और कम व्यय में निपटाया जा सकता है।

ये तो हुई विवाह सम्बन्धी समारोह की बातें।

व्यक्ति के निधन के समय शव पर अनेक शाल और चादरें चढाने की परम्परा भी बहुत समझदारी की नहीं है। मृतशरीर पर एक शुद्ध वस्त्र ओढाने से कार्य चल सकता है। अधिक संख्या में चढाई हुई चादरें कुछ व्यक्ति श्मशान के कोणे में रख देते हैं, कोई-कोई उन्हें जला भी देते हैं। शमशान में पड़ी हुई चादरों को निर्धन व्यक्ति उठाकर ले जाते हैं, जलाने की अपेक्षा कुछ तो उपयोग होता ही है। मृतक भोज के नाम पर काज करना धन का दुरुपयोग है। यदि मृतक की स्मृति में व्यय करना ही अभीष्ट हो तो किसी अनाथ और निर्धन कन्या की शादी करवादें,

गोशाला, धर्मशाला, पाठशाला और परोपकारी साधु-महात्मा, धर्मोपदेशकों की सहायता की जा सकती है। दिवंगत व्यक्ति की स्मृति में कोई धर्मग्रन्थ प्रकाशित कराया जा सकता है अथवा निर्धन और योग्य छात्रों को पुस्तक आदि भी दे सकते हैं।

मृतक के परिवार को सान्त्वना देने के लिए प्रायः प्रत्येक रविवार को दर्जनों स्त्री-पुरुष जाते हैं। ये महिलायें उसी ग्राम में स्थित अपनी रिश्तेदारियों में मिलने चली जाती हैं और घण्टों तक वापिस नहीं आती, इससे समय का दुरुपयोग होता है। मृतक के परिवार को सान्त्वना देने के नाम से निजी काम भी निकाल लिये जाते हैं। इसमें भी सुधार की आवश्यकता है। मृतक के चित्र पर फूल चढाना, चित्र को नमस्कार करना आदि बुद्धिमत्ता नहीं है। इनकी अपेक्षा दिवंगत व्यक्ति के गुणों को अपने भीतर धारण करना, उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये उत्तमकर्म को पूरा करना आदि मृतक के प्रति सच्ची श्रद्धा प्रदर्शित करना है।

विवाह की वर्षगांठ अथवा बच्चों के जन्मदिन पर शराब पीना, जुआ खेलना, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करना, पटाखे छुड़ाकर जल-वायु को दूषित करना भी उचित नहीं है।

अपना विहित कर्म न करके पत्थर की जड़मूर्ति के आगे सिर झुकाना, चढावा चढाना और उससे मनौती मांगना अविवेक है। मनौती मांगनी ही है तो अपने माता-पिता, गुरु आदि सज्जनों और परोपकारी मनुष्यों से मांगनी चाहिये, जिससे सत्कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त होगी और तदनुसार आचरण करने से सफलता भी मिलेगी। रात को सोते समय मूर्ति को सुलाना, प्रातः घण्टी बजाकर उसे उठाना, स्नान कराकर वस्त्राभूषण धारण कराना, खाद्य पदार्थ का भोग लगाना आदि कर्म करते हुए बुद्धि पर थोड़ा-सा जोर देकर सोचना चाहिये कि इन कर्मों से इस जड़मूर्ति को क्या प्राप्ति हुई है। जब उसे भोग लगाया है तो इसने खाया भी होगा, यदि खाया होगा तो प्रातः उसे मलमूत्र त्याग भी कराना चाहिये, परन्तु मूर्ति को भोग लगाने वाला कोई भी व्यक्ति उपर्युक्त शुद्धिकर्म मूर्ति के लिए नहीं करता, ऐसा क्यों? मन्दिर से मूर्ति चोरी हो जाती है, यदि मूर्ति में प्राणप्रतिष्ठा की हुई है तो वह मूर्ति चोर के आने पर शोक क्यों नहीं करती, उस चोर को पकड़ती क्यों नहीं?

यदि मूर्ति में प्राणप्रतिष्ठा हो जाती है तो वह जीवित व्यक्ति की भांति इधर-उधर घूमे, फिरे, इच्छित वस्तु खाये-पीये, परन्तु ऐसा देखने में नहीं आता। यदि मूर्ति में प्राणप्रतिष्ठा होती है तो मृतव्यक्ति में भी पुनः प्राणप्रतिष्ठा करके उसे जिला लिया जाना चाहिये। परन्तु यह सब अपना और अपने परिवार की जीविका चलाने हेतु पाखण्ड किया जाता है। यदि मूर्ति चढावा स्वयं लेने लग जाये तो मन्दिर में पुजारी कोई नहीं रह सकेगा। मूर्ति खाती-पीती नहीं, अपितु उसकी आड़ में पुजारियों का पेट भरा रहता है, यह जनता से धोखा करना है।

इस सामान्य विवेचन का सार यही है कि मानव शरीर में बुद्धि नामक तत्त्व सर्वश्रेष्ठ है, इसका सदुपयोग करना चाहिये, जिस से दुःख दूर होकर सुख की प्राप्ति हो सके।

-विरजानन्द दैवकरणि

सगोत्र में विवाह करने के विरुद्ध सर्वोच्चन्यायलय में प्रस्तुत याचिका

एक शक्तिवाहिनी स्वयं सेवी संस्था द्वारा सगोत्र विवाह की पुष्टि में एक याचिका भारत के सर्वोच्च न्यायलय में (e) No 231-2010 प्रस्तुत की थी, उसके विरोध में आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा ने आचार्य बलदेव जी की प्रेरणा से एक याचिका सुप्रीमकोर्ट में प्रस्तुत की थी, जिसे डॉ० रामप्रकाश जी, डॉ० सुरेन्द्रकुमार जी, डॉ० वेदपाल (मेरठ), डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार (कुरुक्षेत्र)के प्रमाणों से पुष्ट किया गया था। इस याचिका को श्री सत्यवीर शास्त्री और श्री राजवीर सिंह छिकारा ने संयुक्त रूप से 11-2-2013 को प्रस्तुत किया था। इतिहास की दृष्टि से इसे प्रकाशित करके सुरक्षित किया जा रहा है।

1. वादी (शक्तिवाहिनी) ने माननीय कोर्ट को खाप पंचायतों के विषय में पर्याप्त भ्रम की स्थिति में रक्खा है। वादी ने खाप पंचायतों को पार्टी भी नहीं बनाया जो कि नैचुरलजस्टिस के विरुद्ध है। यह तो माननीय सर्वोच्च न्यायलय ने अन्तिम क्षणों में खाप पंचायतों को अपना पक्ष रखने का अवसर प्रदान किया है।

2. इस देश की न्यायप्रणाली न्यायपालिका बहुत संख्या में तथा बहुत समय से लम्बित पड़े हुए मुकदमों का शीघ्र निपटारा में सफलता प्राप्त नहीं कर सकी है। इसके विपरीत इस देश के कुछ औपचारिक और अनौपचारिक संगठन ऐसे हैं जो कि समय को नष्ट किये बिना और बिना किसी भय से पक्षपात रहित निर्णय करते हैं जो सभी पक्षों को स्वीकार्य होते हैं। ऐसे निर्णय सर्वखाप पंचायतों द्वारा खुले रूप में बिना सरकारी सुरक्षा और सहायता लिये हुए किये जाते हैं, इन निर्णयों को माननीय कोर्ट भी मानता है।

3. यह सर्वथा मान्यता प्राप्त कटु सत्य है कि जो उलझी हुई समस्यायें हैं वे केवल पक्षपातरहित मध्यस्थ व्यक्ति के द्वारा परस्पर सहमति और समझौते के द्वारा ही सुलझाई जा सकती हैं और यह भी कटु सत्य है कि न्यायपालिका द्वारा किये गये फैसलों और सजाओं द्वारा जनता की समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता।

4. आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा 'जीओ और जीने दो' के सिद्धान्त में विश्वास रखती है तथा हिंसा की कभी समर्थक नहीं रही है। यह सभा मानवता में विश्वास रखती है तथा जन्मगत जाति को आधार न मानकर सभी मनुष्यों की एक जाति मानती है। साथ ही गोत्र को एक ही वंश या अपने पूर्वजों से प्राप्त नाम को मानती जो कि एक ही परिवार होता है।

5. वादी नें जो हरयाणा और पश्चिमी उत्तरप्रदेश में आनर किलिंग की बात कही है वह किसी सत्य तथा तथ्य बात पर आधारित नहीं है, परन्तु ऐसी अप्रामाणिक और झूठी बात कूड़ेदान में फैंकने योग्य है। ऐसी असत्य बातें समाज में भाईचारा नष्ट करने और वैमनस्य फैलाने वाली होती हैं, इनसे समाज में अशान्ति फैलती है। आनर किलिंग नाम तो मीडिया का मानसिक विकृति से उत्पन्न शब्द है। जबकि वास्तविकता यह है कि यह शब्द

लोगों की सांस्कृतिक मान्यताओं, परम्परागत शुद्ध मान्यताओं, रीति रिवाजों और कानून के बीच टकराव उत्पन्न करता है।

6. यह एक और कटु सत्य है कि तलाक (विवाह विच्छेद) का प्रतिशत नियोजित विवाहों की अपेक्षा लवमैरिज (प्रेमविवाह) का कहीं ज्यादा है। इसमें भी उस वर्ग में स्थिति और भी अधिक खराब है जो स्वयं को शिक्षित और आधुनिक पीढी वाला समझते हैं। उन्नति का तत्पर्य मोबाइल फोन रखना, कार का होना तथा किसी ब्रांडिड कम्पनी के कपड़े पहनना नहीं है, बल्कि परस्पर सौहार्द और समाज में स्वस्थ वातावरण बनाकर रखना ही वास्तविक उन्नति है।

7. आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा विवाह का मुख्य उद्देश्य केवल योग्य और श्रेष्ठ सन्तान पैदा करना ही मानती है। हमें प्राकृतिक (ईश्वरप्रदत्त) नियमों ओर प्रणाली को समझना चाहिये। सबके कल्याण और स्वस्थ परम्परा की बात केवल श्रेष्ठ पुरुष ही कर सकता है, विध्वंस की बातें करना ऐसे मानव का कार्य नहीं होता। विवाह का विषय वासनाओं की तृप्ति तथा इन्द्रियों के सुख प्राप्ति नहीं, अपितु वंश परम्परा को बनाये रखने का एक साधन है। केवल यही नहीं, अपितु अपनी सन्तति को अच्छे संस्कार प्रदान करना और इसी परम्परा को पीढी-दर पीढी तक चलाते रहना ही विवाह का मुख्य उद्देश्य है।

8. यह भी सत्य है कि नैतिक शिक्षा के बिना केवल अक्षर ज्ञान वाली पढाई व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं कर सकती। इसीलिये देश की युवापीढी नैतिक शिक्षा के अभाव में असभ्यता, अनैतिकता तथा अपराधों की ओर बढ रही है। विश्व की कोई भी अदालत ऐसी नहीं है जो केवल सजा, कठोर दण्ड और जुर्माना के बल पर टूट रहे सांस्कृतिक मूल्यों को बचा सके और हिंसा को रोक सके।

9. केवल कानून को लागू करना ही अदालतों का कार्य नहीं है अपितु ऐसे कार्य जिनसे हमारी प्राचीन श्रेष्ठ संस्कृति, सभ्यता एवं रीतिरिवाजों को जानबूझकर तोड़ा जाता हो, उन पर संज्ञान लेना भी अदालत का कर्त्तव्य बनता है। केवल यही नहीं अपितु ऐसे कानूनों में सुधार करना भी न्यायपालिका का दायित्व बनता है।

10. वादी अपने पिटीशन में कुछ तथ्यों को छुपाने का प्रयास कर रहा है, लेकिन उन राज्यों में उन नैतिक मूल्यों की जड़ें इतनी गहरी नहीं हैं कि उसे सफलता नहीं मिल सकती। कानून आयोग की रिपोर्ट के अनुसार आनर किलिंग किसी एक राज्य या अनेक राज्यों की समस्या नहीं, बल्कि यह विश्व की समस्या है और विशेष तौर पर उन देशों की है जो स्वयं को अति उन्नत मानते हैं। जड़ तक पहुंचे बिना समाधान नहीं खोजा जा सकता। माननीय अदालत मुख्य कारणों को खोजकर ही कोई निर्देश दे, इसके बिना तो सभी कार्य व्यर्थ हो जायेगा और समाज में और भी भयंकर स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। जो आपसी भाई-चारे की अखण्डता को हानि पहुंचायेगी, इससे सामाजिक सारी मान्यतायें समाप्त हो जायेंगी।

11. यदि कुछ गैर-जिम्मेदार व्यक्ति गलत बयानबाजी करते हैं तो उनको खाप-पंचायत के रूप में नहीं जानना चाहिये। किसी भी खाप पंचायत ने कभी भी प्रेमविवाहित जोड़ों को मारने का आदेश नहीं दिया है। जिसका प्रमाण R.T.I. नियम के माध्यम से प्राप्त की गई सूचनायें हैं। इन सूचनाओं के अनुसार सन् 2001 से सन् 2011 तक हरयाणा प्रान्त में एक भी ऐसा केस नहीं है जो स्वयं में खाप पंचायतों की कार्यप्रणाली को दर्शाता हो।

12. इसलिये यह समझ में आता है कि लोग हजारों वर्षों से क्यों खाप-पंचायतों पर विश्वास करते आ रहे हैं और इनको ही अपनी संस्कृति और रीति-रिवाजों का रखवाला समझते हैं। यह इनकी सदा से जानी-पहचानी और अनुभूत प्रणाली है। यह विज्ञान द्वारा भी सिद्ध हो गया है कि अपने निकट के रक्त सम्बन्ध में विवाह करने से होने वाली सन्तान में मस्तिष्क के रोग और शारीरिक दुर्बलताओं की बहुलता खतरनाक रूप से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आज का विज्ञान तो उच्च और गुणवत्ता वाली तथा रोगों से रहित फसलों आदि की खोज में भी लगा हुआ है, परन्तु एक मनुष्य जाति ऐसी है कि उसके लिए विवाह का कानून बनाते समय न तो विधानसभा और न ही लोकसभा ने अपने विवेक का परिचय दिया जिससे हमें यह सगोत्र विवाह जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

13. तथाकथित आनर किलिंग का सारा विवाद गोत्र की वास्तविकता को समझे बिना हो रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार ''गोत्र अपने परिवार की वंशप्रणाली है जो अपने पूर्वजों के विषय में वर्णन करती है।'' आचार्य पाणिनि के अनुसार गोत्र उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है जिसमें स्त्री और पुरुष पैदा हुआ है।

14. वैदिकधर्म के अनुसार विवाह कोई व्यक्तिगत कार्य नहीं है अपितु यह एक सामाजिक और धार्मिक कार्य है। इसीलिये शास्त्रकारों ने इस पवित्र बन्धन के लिए कुछ नियम बनाये हैं। ऋग्वेद के अुनसार भाई-बहन का परस्पर विवाह करना एक पापकर्म है। इसलिये एक ही गोत्र के लड़के-लड़की का विवाह होना भाई-बहन के परस्पर विवाह के समान ही पाप कर्म है।

15. व्यास स्मृति के अनुसार केवल पिता के गोत्र की ही नहीं, अपितु माता के गोत्र की कन्या से भी विवाह कना निषिद्ध है।

16. आयुर्वेद के प्रसिद्ध और प्राचीन ग्रन्थ चरकसंहिता के अनुसार समगोत्र विवाह वर्जित है। इसी प्रकार सुश्रुतसंहिता के प्रणेता महर्षि धन्वन्तरि भी एक ही गोत्र में विवाह करके सन्तानोत्पत्ति करना अस्वीकार करते हैं।

17. समगोत्र विवाह से जो सन्तान उत्पन्न होती है वह प्रायः अपंग, कमजोर और मन्दबुद्धि वाली होती है। एक वैज्ञानिक सर्वेक्षण जो कि फिनलैंड, नार्वे, स्वीडन और इंगलैंड में कराया गया, उसके अनुसार सपिंड (समगोत्र) में किये गये विवाह के भयंकर परिणाम सामने आये हैं।

18. यह स्वयं सिद्ध हो चुका है कि इगलैंड में रहने वाले पाकिस्तान के लोग जो

आपस में ही अपने परिवार में विवाह करते हैं उनके अन्दर शारीरिक विकलांगता एवं मानसिक रोग दूसरों की अपेक्षा अधिक पाये जाते हैं।

19. आधुनिक जैविक विज्ञानियों ने यह सिद्ध किया है कि जितनी दूर का मानवीय जीव (रज-वीर्य) का संयोग होगा, उतनी ही उत्तम संतति पैदा होगी, जो शारीरिक और मानसिक दृष्टि से सुदृढ होगी। इसी प्रकार के परिणाम पशुओं की नस्ल सुधार के भी आये हैं। जिन पशुओं को उनके परिवार के या अत्यन्त निकट के पशु से ही क्रास करवाया गया, उनकी आयु, गुणवत्ता कम पाई गई तथा उनके भीतर रोग भी अधिक पाये गये।

20. पाश्चात्य सामाजिक चिन्तक मिस्टर वेस्टर मार्क और मिस्टर रेवरश के मतानुसार भी अपनी निकट की रिश्तेदारी में शादी करने से नस्ल सुधार नहीं होगा और समाज में अनैतिकता का राज्य स्थापित हो जायेगा।

21. एक छोटा-सा इतिहास भी कई शताब्दियों में बनता है, ठीक इसी तरह से कई शताब्दियों के इतिहास से संस्कृति का निर्माण होता है। एक सर्वोपयोगी और अच्छी संस्कृति का निर्माण करना साधारण कार्य नहीं है। सगोत्र विवाह का निषेघ अति प्राचीनकाल से ही है। महाभारत काल मे भी सगोत्र विवाह पर अंकुश था, ऐसे विवाह को मान्यता प्राप्त नहीं थी।

22. बौद्धमतावलम्बी जो लेह और लद्दाख में रहते हैं, वे भी अपनी निकट की रिश्तेदारी में विवाह नहीं करते। समगोत्र विवाह की हानियों को देखकर ही अनेक पाश्चात्य देशों ने सगोत्र विवाह पर प्रतिबन्ध लगाया हुआ है।

23. अमेरिका के आठ राज्यों में सगोत्र विवाह अपराध माना गया है। शेष 31 राज्यों में यह गैरकानूनी है। एक ही गाँव में परस्पर शादी करना अच्छी परम्परा के विरुद्ध है।

24. शहरी वातावरण में जहां इस तरह की परस्पर सहमति है, वहां गांवों के मुकाबलें में यौन शोषण, अनैतिकता आदि बुराइयां युवा पीढी में अधिक दिखाई देती हैं।

25. ब्राह्मण, अहीर, तगा, सैनी और जाट सजातीय विवाह करते हैं, परन्तु गोत्र से बाहर करते हैं। मुसलमानों में मेव भी सगोत्र विवाह नहीं करते। जिन जातियों में गोत्र तो अलग-अलग हैं, परन्तु एक पिता की सन्तति होने के कारण भाईचारा है, वे भी परस्पर विवाह नहीं करते। जैसे-जाखड़, काद्यान, पीरू और सांगवान में चारों अलग गोत्र हैं परन्तु इनका भाईचारा है। अतः ये परस्पर शादी नहीं करते। इसी प्रकार दलाल, देशवाल, मान और सिहाग इनका भाईचारा है। अहलावत, ओहलान, बिरमा, मराह और नून इनका भी भाईचारा है। हुड्डा, मलिक (गठवाला), सहरावत और गुलिया का भी सामाजिक भाईचारा है ये अलग-अलग होने पर भी भाईचारे के कारण परस्पर विवाह नहीं करते। इनमें भी पिता, माता, नानी और दादी के गोत्र बचाये जाते हैं।

26. आपस्तम्बधर्मसूत्र में सगोत्र-सपिण्ड विवाह का निषेध है सगोत्राय दुहितरं

न प्रयच्छेत् (2.5.11.5) निरुक्त में कन्या का विवाह दूर करने का विधान है, दूर=अर्थात् अपने गोत्र से दूर हटकर।

27. महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थसमुल्लास में लिखते हैं- जैसे पानी में पानी पिलाने से विलक्षण गुण नहीं होते, वैसे एक गोत्र पितृकुल वा मातृकुल में विवाह होने में धातुओं के अदल-बदल नहीं होने से उन्नति नहीं होती। जैसे दूध में मिश्री वा शुंठी आदि औषधियों के योग से उत्तमता होती है, वैसे ही भिन्न गोत्र पितृ मातृ कुल से पृथक् वर्तमान स्त्री-पुरुषों का विवाह होना उत्तम है।

विष्णुस्मृति (24.9.10), वसिष्ठस्मृति (8.1), गौतमस्मृति (4.1), और पाराशरस्मृति (10.14.15) में भी सगोत्र विवाह का सर्वथा निषेध है।

28. वादी द्वारा दर्शाये गये बहुत बड़े भूभाग में एक ही गोत्र में विवाह न करने की परम्परा बहुत पुरानी है। जिस तरह की जीवन शैली इस क्षेत्र में अपनाई गई है, वह सुपरीक्षित है और उसका प्रभाव भी आने वाली पीढियों पर सुखद रहा है। अत: माननीय अदालत को संज्ञान लेते हुए हमारी पुरानी परम्परा एवं संस्कृति की रक्षा के लिए विशेषकर, हरयाणा, उत्तरप्रदेश एवं पंजाब में सगोत्र विवाहपर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये, जिससे की पीढियां आनुवंशिक रोगों से बचें और समाज में सौहार्द स्थापित हो।

29. इसलिये संवैधानिक अदालतों (संसद एवं सर्वोच्च न्यायालय) का यह पवित्र कर्त्तव्य बनता है कि वह समाज में स्थापित मान्यताओं, रीति रिवाजों, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों की रक्षा हेतु उचित कदम उठाये, जिससे देश में शान्ति और सद्भाव का वातावरण बना रहे। भारत ने संयुक्त राष्ट्र की आमसभा में भी हस्ताक्षर किये हैं जिसमें परिवार ही बच्चों के विकास का माध्यम माना गया है। इसलिये सगोत्र में हुए कुछ विवाहों के कारण जो हत्यायें हुई हैं उनमें खाप पंचायतों को मिलीभगत का दोषी नहीं ठहराना चाहिये। ऐसा कदम परिवार ने व्यक्तिगत अपमान भावुकता में उठाया हो सकता है, इसमें समाज की कोई स्वीकृति नहीं होती।

30. सारे कानून और न्यायप्रणाली केवल मनुष्यों के लिए ही है। जब एक कानून समाज में वैमनस्य फैलाने वाला हो जाता है तो संविधान निर्माताओं का कर्त्तव्य बनता है कि वे मूल कारण को खोजकर उसका समाधान करें, जिससे समाज में टकराव उत्पन्न न हो और उचित प्रणाली लगातार चलती रहे।

31. न्यायप्रणाली सरकार द्वारा प्रजा की भलाई एवं सेवा के लिए बनाई जाती है, न कि उन पर मनमाना शासन करने के लिए। कई बार लोकसभा द्वारा भी अज्ञानवश आधुनिकता का नाम देकर बुराइयों को प्रोत्साहन दे दिया जाता है। इस तरह की मानसिकता या प्रयोगों पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये।

प्रार्थना- अन्त में माननीय कोर्ट से प्रार्थना है कि वादी द्वारा प्रस्तुत पिटीशन को भारी जुर्माना के साथ रद्द किया जाये।

1965 के भारत-पाक युद्ध की पृष्ठभूमि तथा मेरे संस्मरण

–मेजर रतनसिंह यादव

1. युद्ध की पृष्ठभूमि– विशाल भारत का विखण्डन आरम्भ हुआ तो बर्मा, श्रीलंका आदि स्वतन्त्र राष्ट्र बनते चले गये। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति, भारत विभाजन का दुर्भाग्य पूर्ण तथा रक्त रंजित अध्याय भी 1947 के आते–आते लिख दिया गया। इसके पश्चात् कई नवोदित राष्ट्रों में प्रजातन्त्रीय व्यवस्था से चुनी गयी सरकारों का सैनिक तानाशाहों ने तख्ता पलट दिया। बर्मा, श्री लंका तथा विशेषकर पाकिस्तान में तो प्रधानमन्त्री की हत्या तक कर दी गयी। ऐसे में प्रधानमन्त्री पद के लालच मे भारत विभाजन तक का पाप करने वाले, महात्मा गाँधी के प्रिय जवाहरलाल नेहरु को लगा कि यह चारों ओर के पड़ोसियों के घर में लगी आग कहीं मेरी कुर्सी तक न आ पहुँचे। इससे भयभीत नेहरु जी ने भारतीय सेना को वर्ष प्रति वर्ष कमजोर करने का सिलसिला आरम्भ कर दिया। सेनाध्यक्ष जिसका स्थान वरिष्ठता क्रम में राष्ट्राध्यक्ष गवर्नर जनरल के बाद होता था, घटाकर मन्त्रीमण्डल के सदस्यों से भी नीचे गिरा दिया गया। रक्षा–बजट प्रतिवर्ष कम से कमतर होता गया। इसका दुष्परिणाम 1962 में चीन के साथ हुए युद्ध में हमारी शर्मनाक पराजय के रूप में राष्ट्र ने झेला। हमारे सैनिकों के पास द्वितीय विश्वयुद्ध की पुरानी तकनीक की थ्री नॉट थ्री राइफलें एम्यूरेशन की घोर कमी, बर्फानी प्रदेश की हाडकँपा देने वाली सर्दी से बचाव के कपड़ों का नितान्त अभाव यहाँ तक कि जूते तक न थे। ऐसे हालात में भी हमारी सेना की 13 कुमाऊँ रेजिमेंट की एक कम्पनी ने वीरता का जो इतिहास रचा, उसका उदाहरण विश्व के सैनिक इतिहास में दुर्लभ है। हमें गर्व है कि इस रेजांगला का स्वर्णिम इतिहास लिखने वाले हरियाणा के अहीरवाल क्षेत्र के वीर अहीर ही थे।

2. चीनी आक्रमण के तुरन्त पश्चात् आपाताकाल घोषित कर दिया अब सेना की ओर कुछ–कुछ ध्यान दिया जाने लगा। पर तीन वर्ष से भी कम समय में रक्षा बजट पर कंजूसी बरतने वाली परम्परा की अभ्यस्त सरकार अधिक कुछ न कर पायी। तब तक चीन के चेले पाकिस्तान ने सोचा, चीन की तरह हम भी भारत को पीट लेंगे, काश्मीर छीन लेंगे। पर पाकिस्तान के इरादे इसलिए सफल नही हो सके कि हमने 1962 के युद्ध से थोड़ा–बहुत सीख कर सेना को पहले से अधिक मजबूत कर लिया था। 1962 के युद्ध में हम अपनी विजय पर कितना भी गर्व करें, पर यह कोई पूरी तरह निर्णायक युद्ध न था। काश्मीर में हम भले ही लाभ की स्थिति में थे,

पर सीमा के अन्य क्षेत्रों में हमें हानि भी उठानी पड़ी थी।

3. पर काश्मीर में सेना के लहू ने जो क्षेत्र जीत लिया, उसे ताशकन्द में लिखे कागज की स्याही ने छीन लिया। जिस काश्मीर को हम भारत का अभिन्न अंग कह कर वर्षों से चिल्ला रहे थे, उस अभिन्न अंग को हमारे भीरु, दब्बू तथा समझौतावादी राजनैतिक नेतृत्व ने रूस के दबाव में वापिस शत्रु का अभिन्न अंग बना दिया। सेना के मनोबल पर इसका जो दुष्प्रभाव हुआ, उसे मेरे अग्रज कैप्टन नौरंगसिंह के शब्दों में जो उस युद्ध में सक्रिय भागीदार थे कहूँ ''हम सब रोते हुए वापिस आ गये'' अच्छा हुआ जो श्री लालबहादुर शास्त्री इस समझौते के आघात को न सह सके और अपने प्राण तक दे बैठे, वरना ताशकन्द से लौटने पर उनकी बहुत किरकिरी होती।

4. हमारी यह अदूरदर्शी, आत्मघाती समझौतावादी परम्परा सन् 1971 के शिमला समझौते में भी बनी रही। हमने तो पाकिस्तान के एक लाख के लगभग सैनिक कैदी लौटा दिये, पर अपने लगभग 50 सैनिक कैदियों को पाकिस्तान से छुड़ाना भूल गये। न जाने उनका क्या हुआ होगा। जो जुल्फिकार अलि भुट्टो शिमला में गिड़गिड़ा रहा था, वही अपनी गली में जाते ही शेर बनकर दहाड़ने लगा। ''हम घास खायेंगे, पर एटमबम्ब बनायेंगे। हिन्दुस्तान के हजार टुकड़े करेंगे, हजार वर्ष तक लड़ेंगे।'' संयुक्त राष्ट्र संघ में हमारे विदेशमन्त्री सरदार स्वर्ण सिंह को 'इण्डियन डॉग' तक कहकर अपने पुरखों को भी अप्रत्यक्ष रूप से गाली दी। एटम बम तो भारत से ज्यादा नहीं तो बराबर के तो बना ही लिए। और भी बनाने में लगे हुए हैं। हजार हर्ष तक लड़ने का सिलसिला चालू ही है।

5. मेरे सेना में आने का कारण- मेरे अग्रज सूबेदार नौरंगसिंह भारत विभाजन से पूर्व की मियाँमीर की छावनी लाहौर में सेना में भरती हो चुके थे। मेरी पूज्य भाभी जी सरती देवी को फिरोजपुर, मेरठ, अम्बाला आदि सैनिक छावनियों में कभी-कभी उनके साथ रहने का अवसर मिला। गर्मियों में स्कूल की लम्बी छुट्टियाँ होने पर मैं भी उनके पास चला जाया करता। फौज का जीवन मुझे काफी पसन्द आता था। शिक्षा पूर्ण कर 1961 में अपने गाँव के निकट स्थायी रूप से शिक्षक नियुक्त हो गया। 1962 में चीन ने भारत पर धोखे से अचानक आक्रमण कर दिया। देश में आपातकाल घोषित कर दिया गया। भाई नौरंगसिंह अपनी बटालियन 16 पंजाब के साथ मोर्चे पर चले गये। भाभीजी घर लौट आई। मुझ से कहने लगी, ''रतन! जो तू ये मास्टरी वास्टरी की नौकरी कर रहा है, ये तो जिनानियों का काम है। देश पर आपत्ति आई

है। तेरा भाई कम पढ़ा लिखा है, सूबेदार बन गया। तू तो बीस वर्ष का पढ़ा लिखा जवान है। फौज में ऑफिसर भी बन सकता है।''

तत्कालीन पंजाब सरकार ने (तब हरियाणां न बना था) अपने समस्त विभागों को सर्कूलर जारी कर सेना के लिए वालिण्टियर माँगे। मैंने अपने हैडमास्टर श्री सोमदत्त जी कौशिक को प्रार्थनापत्र देकर सेना के लिए मेरा नाम भेजने का अनुरोध किया। उनका उत्तर था ''इतनी ही तनखा फौज में मिलेगी (तब एक सौ रुपये थी) घर के पास की आराम की नौकरी छोड़कर क्यों मरने के लिए फौज में जाना चाहता है?'' मुझे मध्यकालीन वीर काव्य (आल्हा-उदल) के रचयिता कवि जगनिक की पंक्तियाँ याद आ गई। मैंने कहा-

''बारह बरस तक कुकर जिये, और
तेरह तक जिये सियार।
बरस अठारह छत्री जिये, आगे जिये
को धिक्कार।।''

हम तो मरने के लिए ही बने हैं। मेरा नाम भर्ती कार्यालय महेन्द्रगढ़ में भेज दिया। मेरी योग्यतानुसार मुझे सेना-शिक्षा कोर में हवलदार के पद पर सीधे नियुक्ति मिली।

6. युद्ध के संस्मरण- 1965 के युद्ध के समय मुझे जालन्धर कैण्ट स्थित सप्लाई डिपो केरियर की सुरक्षा तथा युद्ध के मोर्चे से घायल होकर आने वाले सैनिकों को सैनिक अस्पताल में भर्ती कराने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। मेरी सहायता के लिए पाँच नये-नये सैनिक भी थे।

अमृतसर से लाहौर जाने वाले मार्ग पर पाकिस्तान की सीमा में इच्छोगिल नहर है। इस नहर पर पाकिस्तानी सेना पक्के सीमेण्टेड बैंकरों में अमेरीकी आधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित हमारे मुकाबले के लिए पहले से ही तैयार थी। हमारे सेना की थर्ड जाट युनिट को नहर के पार पाकिस्तानी इलाके पर कब्जा करने का अत्यन्त दुस्साहसपूर्ण खतरे से भरपूर चुनौती पूर्ण टास्क सौंपा गया। बहादुर जाटों ने जान हथेली पर रखकर न जाने कितना रक्त बहाकर इच्छोगिल नहर के पानी को लाल कर दिया। सफलता मिली, पर मूल्य बहुत चुकाया। रात को घायलों से भरी ट्रेन अमृतसर से जालन्धर पहुँची। मैं एम्बुलेंस की अस्पताल की गाड़ी, स्टेचर तथा अपने साथी सैनिकों को लेकर घायल सैनिकों को स्टेचर पर रखने लगा तो एक बहादुर जाट सैनिक को अन्धेरे में ध्यान से देखा। उसके चेहरे में गोली धँसी हुई थी। सूजन से एक आँख बन्द हो चुकी थी। उसने हाथ उठाकर मुझे राम-राम कहने का प्रयास किया। मेरी आँखों में आँसू आ टपके। धन्य है वह वीर जवान, धन्य है वह सैनिक परम्परा जिसने ऐसी शोचनीय शारीरिक स्थिति में भी अभिवादन की सैनिक परम्परा को स्मरण रखा। वह मार्मिक दृश्य आज भी मेरी आँखों में सजीव है।

7. जालन्धर कैण्ट में रामामण्डी के निकट जी०टी० रोड से जाते हुए सैनिकों की गाड़ियों को आग्रहपूर्वक रोककर भोजन सामग्री, फल-फ्रूट तथा मालाओं से लादकर सिक्ख भाइयों ने राष्ट्रभक्ति का जो जोश दिखाया, वह अभूतपूर्व था। इण्डियन आर्मी जिन्दाबाद भारत माता की जय से आसमान गूंजता था। आज भले ही कुछ गिने-चुने, पाकिस्तान द्वारा बरगलाये सिक्ख युवक तथा राष्ट्रप्रेमी सिक्ख जनता द्वारा बहिष्कृत, थके माँदे, नेतृत्व तथा पदलोलुप तथाकथित नेता भारत के विरुद्ध विषवमन करें पर पंजाब तथा देश के विभिन्न भागों में सिक्खों की देशभक्ति में किसी को शक नहीं होना चाहिए। ऐसे गुमराह सिक्ख युवकों को सिक्ख जाति के गौरवपूर्ण इतिहास को स्मरण करते हुए गुरु अर्जुन देव तथा जहाँगीर, गुरु तेगबहादुर तथा औंरगजेब, गुरु गोविन्द सिंह और उनके चारों साहिबजादों तथा औरंगजेब के साथ बन्दा बहादुर और फर्रुखशयर के नाम न भूलने चाहिएं। दूर इतिहास की गहराई में न जायें तो देश विभाजन के समय पाकिस्तान से विस्थापित सिक्खों के साथ जो भयानक जुल्म किये गये, उनका आँखों देखा हाल बताने वाले कितने ही आज भी जिन्दा हैं। कितने ही राठौर, चाहौन सिक्ख राजपूत, कितने ही सेठी, बाजवा, घुम्मन इस्लाम की खूनी तलवार का या तो शिकार हो गये या फिर सनम सेठी या जफर इकबाल राठौर बन गये। कोई उदाहरण है क्या जब किसी इस्लाम के अनुयायी ने विभाजन के समय अपना महजब भयभीत होकर बदला हो।

वास्तविकता यह है कि पाकिस्तान 1971 के युद्ध की पराजय का बदला, बंग्लादेश का बदला लेकर खालिस्तान का दिवास्वप्न दिखाकर सिक्ख-हितैषी होने का राजनैतिक पाखण्ड कर रहा है। अरे ये तो वही पाकिस्तानी हैं जिन्होंने साझे भारत के साझे शहीदेआजम भगतसिंह के नाम पर लाहौर के चौराहे का नाम तक नहीं करने दिया। तर्क है पाकिस्तान की भूमि पर किसी गैरमुस्लिम के नाम पर कोई सड़क या स्मारक नहीं होगा।

8. सूर्यास्त होने का था। जालन्धर कैण्ट से कुछ दूरी पहले सतलुज नदी पर रेलवे पुल है। इसी रेल मार्ग से अमृतसर तक हमारी सेनाओं को रसद पहुँचायी जाती थी। पाकिस्तान के तीन छाताधारी सैनिक पास के गन्ने के खेतों में उतर गये। योजना रेल पुल को उड़ाने की थी। गाँववालों ने कैण्ट के हैडक्वाटर को सूचना दी। रियर में तो नाम चारे के सैनिक रहते हैं। उन्हें लेकर हमने गन्ने के खेतों को घेर लिया। पाकिस्तानी छाताधारियों को चेतावनी दी गयी कि जान बचाना चाहते हो तो हथियारों से मैगजीन अलगकर, गले में डालकर, हाथ ऊपर कर आत्म समर्पण कर दें। पहले दो चेतावनियाँ निष्फल रही। अन्त में तीसरी बार

मशीनगनों से गन्ने के खेतों के छलनी करने का आर्डर सुनते ही एक लम्बा-चौड़ा पाकिस्तानी ऑफिसर निर्देश का पालन करते हुए बाहर आ गया। हमारे ऑफिसर ने उसके हथियार लेकर आँखों पर पट्टी तथा दोनों हाथ पीछे की ओर बाँध कर सड़क पर खड़ी जीप की ओर ले चले। कुछ तो मार्ग उबड़-खाबड़ था, कुछ आँखें बन्धी थी, तो कुछ बेचारा घबराया हुआ, धीरे-धीरे चल रहा था। हमारे मिलट्री-पुलिस के एक जवान ने उसे आगे धकेलते हुए पीठ पर एक घूंसा मार दिया। हमारे ऑफिसर ने उस मिलेट्री-पुलिस के जवान को बुरी तरह डाँटा कहा कि कैदी के साथ भी इन्सानियत का बर्ताव करना चाहिए। यह है हमारी संस्कृति और मानवता। दूसरी ओर हमारे कारगिल में कैद हुए कैप्टन सौरभ कालिया के साथ जिस दरिन्दगी और पाशविकता का बर्ताव किया, उसकी गूँज अन्तर्राष्ट्रीय न्यायाय तक गूँज रही है। कैप्टन कालिया का मृत शरीर जब लौटाया तो उसकी अगुंलियों के नाखून तक न थे। उस वीर के कान में गोली मारी गयी थी। जुल्म करने के निकृष्टतम तरीके तो शायद पाकिस्तानी सेना को ट्रेनिंग में सिखाये जाते हैं।

9. युद्ध के कारण अचानक सेना को बहुत बड़ी संख्या में सीमा पर आना पड़ा था। सप्लाई डिपो जालन्धर से स्थान्तरित कर सीमा के कुछ निकट ब्यास आ चुका था। खाद्य सामग्री भण्डारण के लिए फील्ड टैण्ट भी पर्याप्त न थे। ऐसे में हमारे कमाण्डिग ऑफिसर लेफ्टिनेन्ट कर्नल ए०के०गुहा ने बाबा राधास्वामी जी से प्रार्थना की। बाबा जी ने कहा-''सारा डेरा आपके अधीन है। डेरा देश से बड़ा नहीं।'' हमने डेरा के कमरों में फौज का राशन भर दिया। युद्ध की समाप्ति पर वापिस जालन्धर लौटने से पहले बाबा जी का आभार व्यक्त करने सभी ऑफिसर तथा जवान गये। बाबा ने आशीर्वाद दिया।

10. सितम्बर मास आ गया है। सरकार गर्व से 1965 के युद्ध के पचास वर्ष पूरे होने पर विजय समारोह आयोजन करने जा रही है। पूर्व सैनिकों ने इस आयोजन के बहिष्कार की घोषणा पहले ही कर दी है, तो आयोजन हमारे वीर शिरोमणि मन्त्री करेंगे। दूसरी ओर इतने वर्षों में उस युद्ध में प्राण गँवाने वाले कितने ही सैनिकों की वीरागनाएँ तो अपने शहीद पतियों के पास कभी की जा चुकी है। बची-खुची भी इस बहरी सरकार के कानों तक आवाज पहुँचने तक जानी ही है। वे आज के पेंशन प्राप्त कर्त्ताओं की तुलना में एक चौथाई पेंशन पर अपनी वृद्धावस्था ढो रही हैं। हमारे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी और खजाना मन्त्री श्री जेटली के पास जम्मू काश्मीर सरकार के लिए विशेष पैकेज के लिए एक लाख करोड़ रुपये तो हैं पर पूर्व सैनिकों तथा

उनकी विरांगनाओं के लिए मात्र 9100 करोड़ ही हैं। हमारे आदरणीय प्रधान मन्त्री को जब भारतीय जनता पार्टी ने प्रधानमन्त्री पद का उम्मीदवार घोषित किया तो उनकी पहली रैली रेवाड़ी में पूर्व-सैनिकों तथा अर्द्धसैनिक बलों ने आयोजित की थी। ऐसी रैली न भूतो न भविष्यति। मोदी जी ने वचन दिया 'एक रैंक एक पेंशन' मिलेगी। हमारे आदरणीय जनरल वी०के०सिंह भी मंच पर विराजमान थे। आज डेढ वर्ष होने को आया-न तो मोदी जी को अपने वचन याद रहे, न जनरल वी०के०सिंह को उन्हें याद दिलाने की फुर्सत है-मन्त्री जो बन गये। इसका नाम तो है-राजनीति पर है यह राज कुनीति-कुरीति।

हमारे माननीय सांसद पाँच वर्ष में कितने दिन संसद में उपस्थित रहे? संसद में आये तो क्या राष्ट्र हित के बिलों पर बहस में कितनों ने भाग लिया? क्या कभी प्रश्न पूछा? अपने इलाके की भलाई की कितनों ने माँग उठाई कई तो दूरदर्शन पर निद्रा लाभ लेते हुए दिखाये जाते हैं। संसद का कोई कर्त्तव्य पूरा किये बिना अच्छा भला वेतन, पेंशन तथा अन्य सुख-सुविधाएं लेना न भूले। बात बिना बात संसद ठप्प करने वाले हमारे सांसद केवल एक बात को सर्वसम्मति से हाथ उठाकर एक मिनट में पास कर देते हैं-वह बिल है-सांसदों की वेतन वृद्धि तथा पेंशन वृद्धि।

सेना तो बहुत दूर की बात है संसद के दरवाजे पर प्राण देने वाले जवानों तक को कितना महत्व दिया, सब जानते हैं।

इंग्लैण्ड की महारानी का बेटा अफगानिस्तान के मोर्चे पर वर्षों से अपने देश के सम्मान के लिए लड़ रहा है। है कोई हमारे 68 वर्ष के इतिहास में ऐसा उदाहरण जब किसी प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल, या मन्त्री का बेटा भारत माता की रक्षा हेतु युद्ध क्षेत्र में गया हो। सभाओं में नारा लगायेंगे-जय जवान जय किसान। पर काम होगा-मर जवान-मर किसान।

वैसे भी सेना का एक जवान सरहद पर मरता है तो अप्रत्यक्ष रूप से एक किसान भी मरता है, क्योंकि मरने वाला एक किसान का बेटा है किसी राजनेता का नहीं।

अन्त में मैं हमारे देश के सभी नेताओं को नीति शास्त्र के प्रकाण्ड पंडित चाणक्य के शब्दों को याद दिलाना चाहता हूँ जिसकी नीति ने एक साधारण बालक चन्द्रगुप्त को भारत का सम्राट बनाया था।

"चन्द्रगुप्त! जिस दिन सेना तुम से अपने अधिकारों की माँग करने लग जाये, उस दिन तुम्हारे साम्राज्य का पतन आरम्भ हो जायेगा।"

कोई सुन रहा है क्या?

आर्षपाठविधि की विशिष्टता

1. वेद तथा दर्शन, उपनिषदादि प्राचीन आर्षवाङ्मय की रक्षा करना।

2. विद्यार्थियों को चरित्र निर्माण की शिक्षा देकर तदनुसार जीवन बनाना।

3. सदाचार और ब्रह्मचर्य के घातक अश्लील साहित्य से दूर रखना।

4. देश सेवक और देशभक्त विद्यार्थी तैयार करना।

5. शराब आदि सभी प्रकार के नशों और अण्डा, मांस, मछली आदि अभक्ष्य तथा स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद पदार्थों के सेवन से दूर रखना।

6. जूआ और ताश आदि धन और समय को नष्ट करने वाले व्यसन से पृथक् रहना।

7. झूठ, छल, कपट, लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष, मत्सर, हिंसा, चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद आदि का त्याग करना।

8. मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, अन्धश्रद्धा, मृतकश्राद्ध और पाखण्डीजनों से पृथक् रहकर धर्मपूर्वक जीविका चलाना।

9. परस्पर भ्रातृभाव, मधुरभाषण, स्नेह और समानता का व्यवहार करना।

10. जन्म के आधार पर ऊंच, नीच, जाति भेदभाव से अलग रहकर गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्णाश्रम चुनकर यथायोग्य व्यवहार करना।

11. माता, पिता, गुरु, आचार्य आदि के गुणों को अपने जीवन में धारण करके उनके प्रतिश्रद्धाभाव रखकर प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा, शुश्रूषा करना।

12. धर्म के पन्द्रह लक्षणों को जीवन में धारण करना। (धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध, अहिंसा, वेद, स्मृति, सदाचार और आत्मा को प्रियकारक पवित्र भाव।)

13. प्रतिदिन ईश्वरभक्ति, उपासना, यज्ञ करना तथा जीवन की पवित्रता हेतु सोलह संस्कारों का पालन यथासामर्थ्य करना।

14. शरीर की आरोग्यता हेतु आसन, प्राणायाम, व्यायाम और आत्मोन्नति के लिए ध्यान आदि करना तथा यथासामर्थ्य अन्यों को भी उपदेश देकर क्रियाशील बनाने का यत्न करना।

15. अनार्षग्रन्थों के अध्ययन में समय का नाश और बुद्धि में अविवेक उत्पन्न होता है। आर्षग्रन्थों के पठन से अल्पसमय में अधिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

16. अनार्षग्रन्थों में ऋषियों और महापुरुषों की निन्दा भी देखने को मिलती है, तथा उनमें परस्पर विरोधी भाव भी प्रदर्शित हैं। शृंगार प्रधान शब्दाडम्बर की बहुलता संस्कृत साहित्य के मध्यकालीन ग्रन्थों में वर्णित है, उससे जीवन में पवित्रता नहीं आ सकती, अत: प्राणीमात्र के कल्याणार्थ आर्षग्रन्थों का ग्रहण और अनार्षग्रन्थों का सर्वथा परित्याग कर देना चाहिये।

-विरजानन्द दैवकरणि
(गुरुकुल झज्जर)

गुरुकुल झज्जर में छात्रों के प्रवेश हेतु सूचना

सभी अभिभावकों को सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध आर्षपाठविधि के नि:शुल्क शिक्षण केन्द्र महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में विद्याध्ययन हेतु नूतन छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। जिन्हें अपने बालकों को विद्वान्, चरित्रवान्, बलवान्, माता-पिता के प्रति श्रद्धावान्, देशभक्त और विवेकशील बनाना अभीष्ट हो वे अपने बच्चों को अवश्यमेव प्रविष्ट करायें।

* प्रवेश हेतु परीक्षा तिथियां इस प्रकार हैं-

    6 और 20 मई 2018 (प्रथम और तृतीय रविवार)

    3 और 17 जून 2018 (प्रथम और तृतीय रविवार)

* प्रवेशार्थी छात्र कम से कम पंचम कक्षा उत्तीर्ण और अविवाहित हो।
* प्रवेश शुल्क - 2000 रुपये (केवल एक बार)
* भोजन शुल्क - 18000 रुपये वार्षिक। यह शुल्क प्रति छः मास के बाद नौ हजार रुपये के रूप में भी दिया जा सकता है।
* विद्यालय आवासीय है, आवास, बिजली, पानी और अध्यापन का कोई शुल्क नहीं है। परीक्षा के बाद केवल दस दिन का अवकाश होता है। शेस जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

सम्पर्क सूत्र
9416055044 (आचार्य)
9416601019 (कार्यालय)

वस्तुतः यज्ञ ही सृष्टि का आधार है

प्रो० ओमकुमार आर्य, अंतर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता जीन्द (हरियाणा)

वस्तुतः यज्ञ ही सृष्टि का आधार है और यही बात ऋग्वेद के एक मंत्र में भी कही गई है- 'इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या **अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः**। ऋ० 1-164-35

महर्षि दयानन्द के शब्दों में 'यह यज्ञ भूगोल-समूह का आकर्षण से बंधन है' अर्थात् यज्ञ ही समस्त लोकों (भूगोल समूह) को धारण किये हुये है, उनको एकत्र बांधे हुये है, उनका आधार है, उन्हें सम्यक सम्हाले हुये है। परम्परागत धारणा है कि लोक तीन हैं-पृथ्वी, आकाश और पाताल। भुवन चौदह हैं-भूः भुवः स्वः महः जनः तपः और सत्यम्-ये सात पृथ्वी से ऊपर हैं जो कि भौतिक भी है और आध्यात्मिक भी। और सात पृथ्वी से नीचे हैं-तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल और पाताल, वेद के अनुसार इन समस्त लोकों और भुवनों का (पूरे भूगोल समूह का) एक मात्र आधार यज्ञ है।

यज्ञ की अन्य संज्ञायें हवन, होम, अग्निहोत्र, सवन आदि हैं जो भौतिक कर्मकाण्ड के अंतर्गत आते हैं जिनका विशद वर्णन वेद, ब्राह्मण, ग्रंथों, विशेषतया शतपथ ब्राह्मण, गोपथ

ब्राह्मण, में मिलता है। 'यज्ञ' शब्द परमात्मा का वाचक भी है-देखें 'तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जाज्ञिरे'

यजु० 31/8 ऋ० 10/90/9 अथर्व 19.6.12

यहाँ परमेश्वर को 'सर्वहुत यज्ञ' कहा गया है। तो निष्कर्षतया कह सकते हैं कि आध्यात्मिक दृष्ट्या परमेश्वर (यज्ञ) समस्त ब्रह्माण्ड को धारण करता है और भौतिक दृष्ट्या यज्ञ सृष्टि का सम्बल है। इन शास्त्र वचनों के आलोक में हमें यज्ञ के माहात्म्य पर विचार करना चाहिये। यज्ञ की प्रासंगिकता क्या है, इसका वैज्ञानिक महत्त्व महज विश्वास है या यथार्थ तथा इसके अन्य पहलु क्या हैं इन पर विचार विमर्श होना ही चाहिये।

यज्ञ को समझने से पूर्व प्रकृति के इस शाश्वत नियम को भी ध्यान में रखना अत्यन्तावश्यक है कि सृष्टि आदान-प्रदान के सहारे चल रही है अर्थात् कहीं से किसी रूप में लेना होता है तो किसी अन्य रूप में लौटाना भी होता है। यजुर्वेद का एक मन्त्र है- 'देहि मे ददामि ते'' यजु० 3/50 अर्थात् तुम मुझे दो, बदले में तुम्हें मैं दूंगा। दो गे नहीं तो पाओगे भी नहीं। आज हमने प्रकृति का बेहिसाब दोहन किया है, उससे लिया ही लिया है; लौटाये है जहरीले कीटनाशक, विषैली गैसें, नदियों नालों में गन्दगी, प्रदूषण ही प्रदूषण फैलाया है, कुपरिणाम हमारे सामने हैं-भयंकर बीमारियाँ। यज्ञ करके प्रकृति को, जड़ देवों को उनका पुष्टि कारक भोजन दिया जा सकता था, जो लिया है उसकी क्षतिपूर्ति की जा सकती थी सो हमने किया ही नहीं। यज्ञ सृष्टि का आधार इस करके है कि पृथ्वी, अंतरिक्ष द्युलोक में जहाँ कोई न्यूनता है, यज्ञ उसको पूरा करता है। इसीलिये तो 'शतपथ ब्राह्मण' कहता है कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है कि...यज्ञध्वं हविषा तना गिरा' (ऋ० 2.2.1) अर्थात् घी सामग्री से, तन से, वाणी से, सदा यज्ञ करते रहो। सभी श्रेष्ठ कर्म यज्ञ की कोटि में आते हैं सो यह भी अर्थ हुआ कि हम सदैव कार्य, परोपकार के कार्य नित्य करते रहें। ऋग्वेद के ही एक अन्य मंत्र में (1.64.50) यज्ञ शब्द 'धर्म' का वाचक कहा गया है, इसलिये जो यज्ञ नहीं करते वे धार्मिक नहीं कहे जा सकते।

यज्ञ श्रेष्ठ कर्म है, यज्ञ धर्म है, यज्ञ सृष्टि का आधार है आदि की ओर स्पष्टतया इंगित करते हुये योगेश्वर श्री कृष्ण चंद्र ने भी 'गीता' में यज्ञ का भूरिशः महिमा-गायन किया है। एक श्लोक में उनका कथन है कि जो व्यक्ति यज्ञ नहीं करते, यज्ञ विहीन हैं 'अयज्ञ' हैं उनका न यह लोक है न परलोक हैं-देखें-

'नाऽयंलोकोऽस्त्यज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम गीता 4/31

और इस श्लोक में तो उन्होंने यज्ञ को अन्न, वर्षादि का आधार बताकर यज्ञ का महत्त्व और भी स्पष्ट कर दिया-

अन्माद् भवन्ति भूतानि...
...यज्ञः कर्म समुद्भवः गीता 3/14

वास्तव में यज्ञ ही सृष्टि का आधार है, यज्ञ-कर्म हमारी दिनचर्या का अभिन्न अंग होना चाहिये। शास्त्रकारों ने यज्ञ की अपार महिमा को समझा था और 'पञ्च महायज्ञों' का हमारे लिये विधान किया था। महर्षि दयानन्द भी कहते हैं कि जब इस आर्यावर्त देश में राजा और प्रजा बड़े-बड़े यज्ञ किया करते थे तब चहुँ ओर सुख की सुख

था, आज हम यज्ञों से विमुख हैं, परिणामतः चारों ओर दुःख ही दुःख हैं। उनका अभिप्राय स्पष्ट है कि हम यज्ञ किया करें। गोस्वामी तुलसीदास के इस कथन के पीछे का कारण- ''राम राज्य बैठे त्रैलोका। हर्षित भये गये सब शोका। दैहिक, दैविक, भौतिक तापा। रामराज्य काहू नहीं व्यापा भी शायद यही था कि राजा भी याज्ञिक था प्रजाजन भी याज्ञिक थे इसलिये चारों ओर सुख ही सुख था, रोग, शोक, भयादि के लिये कहीं कोई स्थान नहीं था। हमने चूंकि यज्ञ करना छोड़ दिया परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रदूषित हो गया, ऋतु चक्र बुरी तरह प्रभावित हो गया है, ग्रीष्म, शीत, वर्षादि ऋतुओं का कोई निश्चित समय ही नहीं रहा। नाना प्रकार के रोगों ने हम पर आक्रमण किया हुआ है, कभी सुनामी, कभी हुदहुद कभी नीलोफर आदि के रूप में महाविनाश का ताण्डव झेलना हमारी दुःखद नियती बन गई है।

निष्कर्षतया हम कह सकते हैं कि यज्ञ ही सृष्टि का आधार है, सुखी जीवन का एक मात्र सम्बल है, हमारी सबसे ज्वलन्त वर्तमान समस्या-पर्यावरण-प्रदूषण-का एक मात्र सफल और अचूक उपचार है, पर्यावरण के शुद्धिकरण का उपाय है। काव्य में हम यूँ कह सकते हैं-

यज्ञ भुवनों की नाभि है, यज्ञ है सम्बल जीवन का।
नित्य प्रति यज्ञ किया करें, कर्त्तव्य यही है जन-जन का।
यज्ञ उन्नति, यज्ञ प्रगति है मुक्ति का सोपान।
यज्ञ-संस्कृति से ही संभव है प्राणिमात्र का कल्याण।

संपर्क सूत्र
जवाहर नगर पटियाला चौक जीन्द
मो०- 9416294347
01681-226147

---

154 वीं जयन्ती (26.4.2018) पर विशेष...

श्रद्धा एवं समर्पण के मूर्तरूप- पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

प्रो० ओमकुमार आर्य, जीन्द (हरियाणा)

वि० संवत् 1940, दीपावली का पर्व
महर्षि का महाप्रयाण, अथवा कहो कि
महानिर्वाण, राष्ट्र की बलिवेदि पर दिया गया
अपूर्व, ऐतिहासिक बलिदान।
एक युगान्तरकारी व्यक्तित्व का आकस्मिक
अवसान।
सब चकित, स्तम्भित, भयभीत-
कहीं रुक न जाये वेद-प्रचार-अभियान
पुनः सो न जाये सदियों बाद जागा राष्ट्रीय-
स्वाभिमान, आत्मसम्मान।
मद्धिम न पड़ जाये ज्वलन्त वैदिक मशाल
धराधाम पर छा न जाये पुनः तमस विकराल
ढोंग, गुरुडम, अज्ञान, अविद्या का भ्रमजाल।
तभी धमकी अन्य किरणों के साथ,
एक विलक्षण आभामयी दिव्य किरण
उसे किरण कहो अथवा प्रकाशपुञ्ज
तर्क का साक्षात् विग्रह, दृश्यमान जीवन्त
विद्वत्ता
अथक लेखनी, अद्भुत वाग्मिता,
अथाह, अतुलनीय ज्ञान भण्डार
अपने ऋषि को 'जीने' की उत्कट अभिलाषा

पं० गुरुदत्त, आशा की ऐतिहासिक किरण।
वैदिक पथ का निराला, मतवाला पथिक।
तन, मन, धन सब कर गया निछावर
अपने प्रिय, पावन वैदिक-पथ पर।
लेखनी और वक्तव्य से कर गया निरुत्तर,
वेद विरोधियों को, 'सत्यार्थ' निन्दकों को।
टी० विलियम्स, मोनियर विलियम्स,
क्या पिनकॉट क्या मैकसमूलर
सब पर टूटा व्रज बन कर
सदा जीता शास्त्रार्थ-समर
वह धर्म-धुरन्धर, प्रलयंकर,
विरोधियों को यूं लगता था, गुरुदत्त नहीं
मानो समक्ष खड़े हों स्वयँ ऋषिवर।
उसने तेल नहीं निज रक्त जलाकर
जलती रखी वैदिक मशाल निरन्तर।।
वह तप, त्याग, आस्था का उत्तुंग स्तूप
ईश्वर, वेद, ऋषि के प्रति
श्रद्धा, समर्पण का मूर्तरूप।।
हे आर्यों के गौरव पं० गुरुदत्त
तुम सचमुच अद्भुत, अनुकरणीय, अनूप।।
तुम सचमुच अद्भुत, अनुकरणीय अनूप।।

जवाहर नगर, पटियाला चौक
जींद (हरियाणा)
मो०- 9416294347
01681-226147

मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत) दिल्ली सरकार

पंजाब की पावन भूमि ने अनेक नररत्न उत्पन्न किये। उन में से एक रत्न, प्रतिभाशाली, कुशाग्र बुद्धि पं० गुरुदत्त विद्यार्थी भी हैं।

बाल्यकालः- पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 ई० को मुलतान (वर्तमान पाकिस्तान) में सरदाना नामक कुल में श्री रामकृष्ण जी के घर हुआ। लाला रामकृष्ण जी फारसी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। आपकी माता जी अशिक्षित होते हुए भी धार्मिक तथा उदार थी। रामकृष्ण जी के घर में जो भी सन्तान उत्पन्न होती, वहीं कुछ दिनों बाद चल बसती थी, इससे वे अत्यन्त दुःखी थे। एक बार आपने अपने गुरु के पास जाकर निवेदन किया कि गुरुजी! मेरी कोई भी सन्तान जीवित नहीं बचती है। आप कृपा करके कोई उपाय बताइये जिससे कि मेरी सन्तान जीवित रह सके। तब गुरु जी के उपाय द्वारा उन्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। गुरु जी की कृपा से पुत्र उत्पन्न हुआ था अतः उसका नाम गुरुदत्त रक्खा गया। गुरुदत्त जी कुशाग्र बुद्धि थे ही, वे बचपन में ही माता-पिता से ऐसे प्रश्न करते थे जिन्हें सुनकर माता पिता आश्चर्यचकित रह जाते थे।

शिक्षाः- गुरुदत्त जी के पिता शिक्षा विभाग में अध्यापक थे, अतः वे गुरुदत्त को स्वयं ही मनोरंजक तरीके से पढाने लगे। इनके पिताजी जब भी किसी गांव आदि में जाते तो गुरुदत्त को भी साथ ही ले जाते। मार्ग में गुरुदत्त के प्रश्नों का समाधान करते जाते। पिताजी ने आपको घर पर ही उर्दू तथा फारसी का अच्छा ज्ञान करा दिया

था। तत्पश्चात् उन्होंने गुरुदत्त को अंग्रेजी पढाने का विचार किया। वे अंग्रेजी नहीं पढे थे, अतः उन्होंने पहले स्वयं अंग्रेजी भाषा पढी तब गुरुदत्त को स्वयं ही अंग्रेजी पढाई।

विद्यालय में प्रवेशः- रामकृष्ण जी झंग नामक स्थान पर अध्यापक थे, अतः गरुदत्त को भी 8 वर्ष की आयु में अपने विद्यालय में ही प्रविष्ट करा दिया। गुरुदत्त जी अंग्रेजी आदि विषयों में अन्य छात्रों के समान ही थे, परन्तु फारसी तथा गणित आदि विषयों में सबसे अग्रणी थे। आपने उसी आयु में फारसी के अनेक ग्रन्थ पढ डाले थे। आप कविता करने में भी अत्यन्त निपुण थे आप मिडल पास करके वापिस मुलतान आ गये तथा वहां के उच्चविद्यालय में प्रविष्ट हो गये। वहां का सारा अध्यापक वर्ग आपके बुद्धिचातुर्य पर मुग्ध था।

स्वाध्यायशीलताः- प्रायः छात्र परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिये ही पढते हैं, किन्तु आपने तो विद्यालय के पुस्तकालय की सारी पुस्तकें पढ डाली। एक धार्मिक अध्यापक के सत्संग से आपको कुछ धार्मिक साहित्य भी हस्तगत हो गया, जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी पुस्तकें भी थीं, अतः आपकी प्राणायाम में भी रुचि हो गई।

मन की एकाग्रताः- प्राणायाम करने के कारण आपके मन की एकाग्रता बढ गई। कुशाग्र बुद्धि के कारण आप हर विषय को क्षणों में ग्रहण कर लेते थे। हाईस्कूल कक्षा में आप अंग्रेज विद्वानों की तरफ आकृष्ट हुए, जिनके कुप्रभाव के कारण आपमें ईश्वर विश्वास की भावना समाप्त हो गई तथा आप नास्तिक बन गये।

आर्यसमाज में प्रवेशः- उन्हीं दिनों आपका सत्संग किसी आर्यबन्धु से हुआ तथा आपका झुकाव आर्यसमाज की तरफ हो गया। आपने सत्यार्थप्रकाश का गम्भीर अध्ययन किया। आप 20 जून 1880 को विधिवत् आर्यसमाज में प्रविष्ट हो गये। आपके रमलदास तथा चेतनानन्द दो परम मित्र थे। वे भी आर्यसमाजी थे। आपने गुरु असमानन्द जी से अष्टाध्यायी का डेढ अध्याय पढा। तत्पश्चात् ऋषिकृत वेदांगप्रकाश के अष्टाध्यायी का डेढ अध्याय पढा। तत्पश्चात् ऋषिकृत वेदांगप्रकाश के द्वारा अष्टाध्यायी का अध्ययन भी किया। संस्कृत साहित्य में भी आपकी अच्छी गति हो गई थी। आपके प्रश्नों के सामने विद्यालय के अध्यापक तथा विद्यालय निरीक्षक भी निरुत्तर हो जाते थे तथा उच्च कक्षाओं के छात्र भी आप से पढने आते थे।

योगप्रेम तथा साधुसेवाः- आपकी प्राणायाम में तो पहले ही रुचि थी, अब आप को योग साधना की धुन भी लग गई थी। जब आपको किसी योगाभ्यासी साधु का पता चलता तो आप उसकी बडी श्रद्धा से सेवा करते। आपको आर्यसमाज की ऐसी धुन लगी कि आप एन्ट्रेस की परीक्षा के समय भी आर्य साहित्य को पढते रहते थे तथा पाठ्यक्रम की पुस्तकें अलमारी में रक्खी रहती थी। इतने पर भी आप सदा परीक्षा में प्रथम ही आते थे।

सत्यप्रियता तथा सदाचारः- आप अत्यन्त सत्यप्रिय थे, आप मजाक में भी कभी झूठ नहीं बोलते थे। आपका चरित्र इतना ऊंचा

था कि आप किसी भी कार्य को करने से भय नहीं खाते थे।

कालेज जीवनः- सन् 1881 ई० में आप लाहौर कालेज में प्रविष्ट हुए, उस समय पूरे पंजाब में वह एक ही कालेज था। कालेज के प्रधानाचार्य श्री लाईटनर अच्छे विद्वान् तथा सहृदय व्यक्ति थे। उनका प्रभाव भी आप पर अच्छा पडा। कालेज में पढते हुए आपने दर्शनों का भी विश्लेषण किया। आप दर्शनशास्त्र के तो पारंगत हो ही गये थे साथ ही गणित, विज्ञान, अरबी, व्याकरण आदि विषयों में भी अनुपम योग्यता रखते थे। आप पाठ्यक्रम से अतिरिक्त इतना अध्ययन करते हुए भी 1883 ई० में एफ०ए० की परीक्षा में सर्वप्रथम रहे।

आस्तिकता की छापः- सन् 1883 ई० में गुरुदत्त जी को आर्यसमाज की तरफ आज्ञा मिली कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द अजमेर में रुग्ण हैं, आपको उनकी सेवा के लिये जाना है उस समय आप की आयु 19 वर्ष की थी, किन्तु इस कार्य के लिये सर्वथा योग्य थे। आपने इस आज्ञा को शिरोधार्य कर अपने को धन्य समझा। महर्षि की उस अवस्था को देखकर गुरुदत्त आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने देखा कि महर्षि के शरीर पर रोम-रोम पर फोडे हैं फिर भी ऋषि के मुख से आह तक नहीं निकलती थी। जिस समय महर्षि ने नश्वर शरीर त्यागा उस समय उनके मुख पर जरा सी भी विषाद की छाया न थी। अन्त समय में ऋषि ने गायत्रादि मन्त्रों का उच्चारण किया तथा कहा "हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" तथा प्राणायाम भर कर श्वास छोडते समय ही ईश्वर में विलीन हो गये। यह देख गुरुदत्त मन्त्रमुग्ध होगये तथा उसी समय से पक्के आस्तिक बन गये तथा पक्के आर्यसमाजी भी बन गये।

अजमेर से आते ही आपने वैदिक साहित्य का मन्थन किया। जैसे जैसे आप ऋषिकृत ग्रन्थ पढते गये आपकी ऋषि के प्रति श्रद्धा बढती गई। आपने सत्यार्थप्रकाश को अठारह बार पढा, जबकि आप किसी भी ग्रन्थ एक बार पढते ही स्मरण कर लेते थे। सत्यार्थप्रकाश पढते समय प्रत्येक बार आपको नये-नये रत्न प्राप्त हुये।

सन् 1886 ई० में आपने एम०एस०सी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस परीक्षा मे भी आप विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम रहे। इस परीक्षा में आपने इतने अंक प्राप्त किये कि बाद तक भी इतने अंक किसी ने प्राप्त नहीं किये। जबकि आप आर्यसमाज के कार्य में भी व्यस्त रहते थे। आपकी विज्ञान की पुस्तकें अब भी विदेशों पढाई जाती हैं।

आपने योग सीखने के लिये योगदर्शन का अध्ययन किया। आपने वेदार्थ समझने के लिये निरुक्त आदि ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया। आपके देखा देखी आपके मित्र मुंशीराम तथा आत्माराम भी अष्टाध्यायी पढने लगे थे।

स्वामी अच्युतानन्द एक अद्वैतवादी संन्यासी थे, उनसे आपने वेदान्त दर्शन पढा। आपके प्रश्नों का उन पर ऐसा प्रभाव पडा कि स्वामी जी भी तभी से आर्यसमाजी बन गये।

इसी प्रकार एक देहरादून निवासी महानन्द जी भी दार्शनिक थे, आपने उनसे भी कुछ दिन दर्शन पढे। आपके प्रभाव से वे भी आर्यसमाजी बन गये।

विदेशी पंडितों को मुहतोड़ उत्तरः- अमेरिका तथा यूरोप के कई संस्कृत पंडित, आपसे प्रश्नों के उत्तर पूछते थे। वे भी आपके उत्तरों को सुन दातों तले अंगुली दबाते थे।

आपने वैदिक सिद्धान्तों पर आक्षेप करने वाले विदेशी विद्वानों को ऐसे अकाट्य उत्तर दिये, जिसमे वे निरुत्तर हो गये। आपने सामवेद संहिता के स्वरों का भी संशोधन किया था। आपने वैदिक मैगजीन नामक एक पत्र भी निकाला था। जिसके द्वारा आपने आर्यसमाज तथा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया।

दिन रात आर्यसमाज का प्रचार करने के कारण आपका स्वास्थ्य गिर गया। आपकी चिकित्सा प्रसिद्ध डाक्टरों से कराई गई। डाक्टरों ने आपको मांस खाने की सलाह दी। आपने उन्हें उत्तर दिया-''मैं थोडे से जीवन के लिये धर्म को नहीं त्याग सकता, धर्म के लिये बलिदान होने को तैय्यार हूं।

स्वर्गवासः- 18 मार्च 1890 ई० की रात के 12 बजे आपकी दशा बिगड़ गई। जीवन की कोई आशा नहीं रही। आपने देहावसान से पहले मन्त्रों का उच्चारण किया। ईशोपनिषद् की कथा सुनी। दूसरे दिन 19 मार्च को इस असार संसार से सदा के लिये प्रस्थान कर गये।

धन्य हैं पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी, जिन्होंने महर्षि के आदेशानुसार अन्त समय तक आर्यसमाज की सेवा की। आज तक भी आर्यसमाज में आपके स्थान की पूर्ति नहीं हो सकती है। मुनिवर पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी को शतशः सादर नमन।

111/19, आर्यनगर, झज्जर
मो०- 9996227377

यज्ञ एक वैज्ञानिक विवेचन

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री (संपादक अध्यात्म पथ)

किसी भी मांगलिक अवसर पर हम अपनी सफलताओं और उपलब्धियों पर संतोष व्यक्त करें यह नितान्त स्वाभाविक है। सामान्य बोचाल की भाषा में कहा जाता है कि हम इस आयोजन को धूमधाम से करेंगे। धूमधाम से सामान्यतः यह अर्थ ग्रहण किया जाता है कि हम परस्पर इकट्ठे होकर एक पार्टी दें और झूमें और गावें। वस्तुतः धूमधाम एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। जो दो शब्दों के मेल से बना है। धूम का अर्थ है- धुंआ, धाम का अर्थ है स्थान। इसका अर्थ यही है, जिस स्थान पर यज्ञ का धुंआ हो, जहां यज्ञ का आयोजन हो, उसी को ही धूमधाम कहते हैं।

यज्ञाधीनं जगत् सर्वम्, सारा संसार यज्ञ के आधीन है। जगत् को स्वस्थ तथा सुव्यवस्थित रखने के लिए यज्ञ का होना अनिवार्य हे। आर्ष सिद्धान्त अग्नि को शोधक, विभाजक शक्ति मानता है क्योंकि अग्नि ऊर्ध्वमुखी, किन्तु सूर्य की गति को टेढ़ी गति मानते हैं, अग्नि में आहुत पदार्थ शीघ्र वायु मण्डल में फैल जाता है और सूर्य की किरणों तथा विद्युत् शक्ति से घर्षण के कारण उसकी शक्ति असंख्य गुणा बढ़ जाती है, जिससे प्रदूषणों का निवारण और रोगनाश होने लगते हैं। वैदिक साहित्य में धुंयें और ज्योति को विशिष्ट माना है। 'धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः' धुएँ और ज्योति का सम्मिश्रण पाकर वायु और जल विशोधित होते हैं। अग्निहोत्र देवयज्ञ सूक्ष्मीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है। हवनकुण्ड में अग्नि के दहन से औषधतत्व आसक्ति होकर प्रकाश संश्लेषण और ऑक्सीकरण सिद्धान्त से असंख्य

गुणा प्रभावशाली हो जाते हैं। हवन द्वारा उत्पादित तत्व असंख्य गुणा प्रदूषणों का निवारण करने में समर्थ है। यज्ञिय उर्जा का प्रभाव प्राणी जगत् के लिए उपयोगी है। जो वस्तु खाने में एक व्यक्ति को लाभ देती है वही वस्तु उचित ताप में जलाने पर असंख्य लोगों के लिए प्रभावकारी होती है।

औषधियों को आग में जलाने से उनमें विद्यमान तत्त्व ज्यों के त्यों हवा में फैल जाते हैं। उदाहरण के लिये दालचीनी में विद्यमान 61 प्रतिशत सिन्नोमिव, एल्डीहाईड तथा 10-12 प्रतिशत युजिनाल रक्त में घुलकर उसे पतलाकर हृदय-आघात से रक्षा करने में सहायक है। इसी तरह अंजीर में विद्यमान 'फिसिन' नामक तत्त्व आन्त्र कृमिनाशक है। इलायची में विद्यमान टर्पिनिआल और सीनिआल तत्त्व शरीर के दर्द का नाशक है।

भवन की सार्थकता उसमें निवास से है, गृह की सार्थकता गृहिणी (नारी) से है, होम की सार्थकता पवित्रता प्राप्ति करके प्रदूषण निवारण से है।

यज्ञ की मूलभावना है परोपकार, तो हम अपनी प्रसन्नता में दूसरों को भी सम्मिलित करें, उनकी उपेक्षा न करें, यही यज्ञ है। अंग्रेजी में घर को Home कहा जाता है, कौन नहीं चाहता कि घर में पावनता हो, यज्ञ से पावनता प्राप्त होती है तो वास्तव में होम के बिना कोई Home बन ही नहीं सकता।

आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण किये हुए है। इसका निवारण यज्ञ से ही सम्भव है। अनार आदि वृक्षों का फल जब झड़ता है तब माली गुग्गल का धुंआ देकर ही उसके फल को उगाता है। यह हवन (यज्ञ) ही तो है।

यज्ञ (हवन) से लाभ-

1. पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगन्धित होता है।
2. प्रदूषण दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होती है।
3. दुःख एवं दारिद्र्य का नाश होता है।
4. मानसिक शान्ति की प्राप्ति और आनन्द की वृद्धि होती है।
5. सुविचारों का जन्म होता है, जिससे बुद्धि बढ़ती है।
6. सात्विक कार्यों की वृद्धि होती है।
7. शान्ति तथा सद्भाव
8. देवपूजा, संगतिकरण और दान होते हैं।
9. मानवीय कर्तव्य का पालन होता है।

महर्षि दयानन्द जी का कथन है-जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तक तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।

यज्ञ आयुधारक है-यथा-**यदग्नये शुचये आयुरेवास्मिन् तेन दधाति।** पवित्र अग्नि में जो आहुति दी जाती है उससे यज्ञ, यजमान की आयु धारण कराता है।

प्रतिदिन

अतः प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिये। शरीर की शुद्धि के लिये स्नान, संपत्ति की शुद्धि के लिए दान, मन की शुद्धि के लिए ध्यान तथा पर्यावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ का अनुष्ठान आवश्यक है।

फ्लैट नं०-सी-1, पूर्ति अपार्टमेण्ट विकासपुरी
नई दिल्ली-18, चलभाष-9810084806

आर्य आर्युवेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

की विशेष ओषधियां

अभयारिष्ट

गुण :– बवासीर, अजीर्ण, कब्ज, पाण्डु, जिगर तिल्ली आदि पेट के सभी रोग दूर होते है

सेवनः– 2 तौला औषध समान जल मिलाकर
पातः–सायं भोजनोपरान्त लें

कुटजारिष्ट

गुण :– संग्रहणी, पुराना अतिसार, खुनी दस्त खुनी दस्त तथा पेचिश की अति उतम औषध है।

सेवनः– 1 से 2 तौला औषध समान जल मिलाकर भोनजोपरान्त लें

दशमूलारिष्ट

गुण :– प्रसूता स्त्री के ज्वर, दस्त, उदर पीड़ा, हिस्टीरिया, मूर्च्छा, अर्श, नपुंसकता का नाशक और पुरुषों के वल–वीर्य का वर्धक है

सेवनः– 1 से 2 तौला औषध समान
जल मिलाकर लें

लोहासव

गुण :– रक्ताल्पता, पाण्डु, कामला, जीर्ण–ज्वर, ज्वरान्त दौर्बल्य, बढ़े हुए जिगर एवं तिल्ली की सुप्रसिद्ध औषध है

सेवनः– बराबर का जल मिलाकर भोजन के 30
मिनट बाद पीना चाहिए

त्रिफला चूर्ण

यह चूर्ण पेट को नियमित रखता है, मन्दाग्नि मलवन्ध, पुराने दस्त, पेट दर्द में बहुत लाभदायक है नेत्रों के लिए भी हितकारी

अनुपम रस

गुण :– उदरशूल, उदावर्त, आनाह, जिगर तिल्ली, आदि उदर रोगों का नाशक है।

सेवनः– 1 चम्मच चूर्ण प्रातः खाली पेट जल के साथ लें

तालीशादि चूर्ण

गुण :– जीर्ण, खाँसी, अरूचि, अग्निमांद्य तथा कफ प्रधान रोगों में लाभदायक

सेवनः– 1 से 3 माशा ग्राम औषध शहद के साथ लें

पञ्चगव्य घृत

गुण :– यह घृत अपस्मार (मृगी) की अत्युत्तम औषधि है। मूर्च्छा अपतन्त्रत, उन्माद, चौथैया ज्वर तथा उदर रोगों में रामबाण है

कुमार्यासव

गुण :– स्त्री–पुरुषों के उदर रोग, गुल्म, परिणामशूल, यकुत, नलाश्रितवात, जुकाम, कास, वातविकार, गर्माशय दोष, मासिक धर्म के रागों का नाशक।

सेवनः– 1 से 2 तौला औषद्य समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त लें।

शुद्ध मधु

हम पर्वतीय प्रदेशों से शुद्ध मधु मंगवाते हैं। यह रस आदि के साथ प्रयोग में लाया जा सकता है

मेदोहर गुग्गुल

यह गुग्गुल खून साफ, चर्बी व मोटापे को खत्म कर शरीर को सन्तुलन मे लाता है

सेवन विधि :– गौमूत्र अर्क या शहद नीबू के पानी से दिन में 2 बार

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३.	कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग) ''	६५०-००
७.	काव्यालंकारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
८.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
९.	दयानन्ददिग्विजयम् (१-२ भाग) ''	३५०-००
१०.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	२५०-००
११.	योगार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	२०-००
१२.	सांख्यार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
१३.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१४.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	२५०-००
१६.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७.	वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प ''	३०-००
१९.	दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२१.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२.	देशभक्तों के बलिदान	१५०-००
२३.	सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (स्वामी दयानन्द)	५-००
२६	व्यवहारभानु (स्वामी दयानन्द)	१५-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	४०-००
२८.	चारों वेद मूल	८८०-००
२९.	सामपदसंहिता	२५-००
३०.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३.	घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह)१-५ भाग	१००-००
३४.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५.	स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३६.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
३७.	ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) ''	६००-००
३९.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४१.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४२.	प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर	२००-००
४३.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
४४.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
४५.	प्राचीन ताम्रपत्र एवं शिलालेख	२००-००
४६.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-२)	३००-००
४७.	छन्दःसूत्रम् (हिन्दी भाष्य सहित)	१२०-००
४८.	आर्य सत्संग पद्धति	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या–P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री ____________________

स[illegible] ____________________

डा० ____________________

जिला ____________________

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रवन्ध से छपवाया।